

व्रजमंडल पुं. (तत्.) व्रज प्रदेश, मथुरा-वृंदावन और उसके आस पास का क्षेत्र।

व्रजमोहन/व्रजराज/व्रजलाल/व्रजवल्लभ पुं. (तत्.) वासुदेव श्रीकृष्ण।

व्रजांगना स्त्री. (तत्.) 1. व्रज की कन्या, युवती, स्त्री 2. गोपिका, गोपी।

व्रजावर्त पुं. (तत्.) एक मेघ का नाम।

व्रजी स्त्री. (तत्.) व्रज की भाषा या बोली, व्रज भाषा।

व्रजेश वि. (तत्.) व्रज के स्वामी, श्रीकृष्ण।

व्रज्य वि. (तत्.) व्रजन संबंधी, व्रजन के योग्य, घूमने फिरने योग्य।

व्रज्या स्त्री. (तत्.) 1. घूमना-फिरना, पर्यटन 2. आक्रमण, चढ़ाई 3. संन्यासी के रूप में भ्रमण 4. पगडंडी 5. रंगभूमि, नाट्यशाला।

व्रण पुं. (तत्.) फोड़ा, घाव, क्षत, चोटिल स्थान।

व्रणित वि. (तत्.) 1. जिसे फोड़ा निकला हो, जिसे घाव हुआ हो 2. आहत, घायल।

व्रणीय वि. (तत्.) व्रण से संबंधित, व्रण के कारण, व्रण के फलस्वरूप।

व्रत पुं. (तत्.) 1. दृढ़ संकल्प, पक्का संकल्प 2. प्रतिज्ञा 3. प्रतिज्ञा करके अपनाया गया नियम 4. पुण्य-प्राप्ति के लिए उपवास आदि करने का नियम 5. अनुष्ठान, आराधना, भक्ति।

व्रतचर्या स्त्री. (तत्.) व्रत रखना, धार्मिक अनुष्ठान कार्य।

व्रतचारी वि. (तत्.) 1. व्रत करने वाला, व्रतधारी, व्रतधर 2. कोई धार्मिक अनुष्ठान करने वाला।

व्रतति/व्रतती स्त्री. (तत्.) 1. लता, बेल 2. वृद्धि, विस्तार।

व्रत पारण वि. (तत्.) 1. किसी व्रत की समाप्ति, वह पारण जो व्रत के अंत में किया जाता है 2.

व्रत की समाप्ति कर किया जाने वाला अनुष्ठान एवं भोज।

व्रत-बंध पुं. (तत्.) यज्ञोपवीत, उपनयन संस्कार, जनेऊ, संस्कार।

व्रत-भंग पुं. (तत्.) प्रतिज्ञा खंडित हो जाना, व्रत टूट जाना, प्रतिज्ञा टूट जाना।

व्रत लोपन पुं. (तत्.) व्रत भंग हो जाना, प्रतिज्ञा तोड़ना।

व्रतवर्य पुं. (तत्.) व्रतों में श्रेष्ठ व्रत, मुख्यव्रत।

व्रतस्थ वि. (तत्.) जिसने व्रत धारण किया हो, व्रतधारी, ब्रह्मचारी।

व्रत्यनुप्राण पुं. (तत्.) भरण-पोषण का उपाय।

व्राचड़ पुं. (तत्.) 1. अपभ्रंश भाषा का एक भेद जिससे सिंधी भाषा का विकास हुआ 2. पैशाची भाषा का एक भेद।

व्रातिक/व्रती वि. (तत्.) (तत्.) व्रत रखने वाला, व्रत धारण करने वाला, संकल्प करने वाला।

व्रात्य पुं. (तत्.) 1. वह द्विज जो समय पर यज्ञोपवीत संस्कार के न होने से पतित हो गया हो और वैदिक कृत्यादि करने के अधिकार से वंचित हो गया हो 2. नीच, अधम आदमी 3. शूद्र पिता और क्षत्राणी माता से उत्पन्न व्यक्ति, वर्णशंकर विशेष।

व्रीड/व्रीडा स्त्री. (तत्.) लज्जित होना, संकोच, शर्म काव्य. एक संचारी भाव, संकोच, लज्जा का भाव।

व्रीडित वि. (तत्.) लज्जित, शर्मसार, विनीत, नम्र।

व्रीहि पुं. (तत्.) कोई भी अनाज, धान, चावल।

व्रीहिल वि. (तत्.) धान वाला, अनाज वाला (क्षेत्र)।

विहस्की स्त्री. (अं.) एक प्रकार की यूरोपीय शराब जो जौ के किण्वन से तैयार की जाती है।

व्हेल स्त्री. (अं.) 1. विशाल मछली की तरह का स्तनपायी समुद्री प्राणी, जिसे संस्कृत में तिमिंगल कहा जाता है, महामत्स्य 2. अत्यधिक, प्रचुर, अंतहीन।